

स्निग्ध m. Bez. gewisser nächtlicher gespenstischer Wesen AV. 8,6,10.
 स्निग्ध (स्निग्ध), स्निग्धयति (गतिशोषणयोः) DuRup. 26,3. missrathen: या-
 नि पञ्चमास्यानि रेतंसि ज्ञायते स्निग्धयति वै तानि Ait. Br. 4,22. partic.
 सूत P. 6,4,20.
 — caus. श्रोवयति und स्नेवयति missrathen machen, vereiteln: श्रू-
 तिम AV. 6,73,2. fehlgehen machen: श्रुदितं पुरुषीम् 7,18,8.
 स्निग्धम् und स्निग्ध स. श्रुतवयम्.
 सु, स्रवति (गती) Naigh. 2,14. DuRup. 22,42. सुस्राव, सुस्राव, सुस्रु
 Vop. 8,57,96. P. 7,2,13. सुस्रुवत् 3,1,48. Vop. 8,86,96. सुस्राव, सुस्राव,
 स्रवितवे. स्रवत्ती s. bes. Hier und da des Metrums wegen auch med.
 1) fließen, strömen, in Fluss —, in Bewegung gerathen, ausfließen:
 शृणोर्षः सीरा न स्रवत्ती: RV. 1,174,9. सम्पक्कस्रवति सरितो न धेनी: 4.
 58,6. 3,12. 19,8. 7,21,3. या श्रौषा दिव्या उत वा स्रवति 49,1. 10,104.
 8. AV. 7,112,1. Ait. Br. 3,26. Çat. Br. 8,3,2,5. 9,3,4,24. 12,7,4,1.
 गवां स्तनेषु रुधिरम् Shadv. Br. 5,9. रसः Maitrjup. 6,37. सागराम्भसि
 मरुद्गुणाणां निर्वासाः MBh. 1,1137. 3,6087. तरुभ्यः स्रवते तेभ्यो त्रिविधं
 मनसेप्सितम् Hariv. 8236. नहि निम्बान्नवेत्तौद्रम् R. 2,35,15. निःस्य-
 न्दाः 94,13 (103,13 Gorr.). स्रवद्धारि Varāh. Brh. S. 24,17. Buāg. P. 8.
 10,24. Flüsse 3,29,42. 4,29,40. Prabh. 87,11. स्रोतसा तेन सुस्राव गङ्गा
 R. Gorr. 1,45,11. स्रोतांसि गिरिधातुभ्यः R. Schul. 2,63,18. सरसः सरयूः
 1,26,9. वार्षिः स्रवद्भिर्निर्विन्ध्यायाः Buāg. P. 4,1,18. वारि नेत्राभ्यां पु-
 ष्काराभ्यामिवोदकम् R. Gorr. 2,30,27. 5,31,3. नयैः सलिलम् R. Schul.
 2,40,34. स्रवन्नेत्रजल MBu. 2,2592. Rāga-Tar. 2,162. Blut MBu. 5,7273.
 6,4038. Buāg. P. 9,3,4. बाणात्तरेभ्यः R. 3,35,84. आस्यात् 73,19. गलात्
 Buāg. P. 5,9,19. स्रवन्मद R. 2,94,13. Varāh. Brh. S. 44,23. रेतः MBu.
 1,5081. लाला Spr. (II) 5914. मूत्रम् 7186. पयः स्तनाभ्याम् Buāg. P. 4.
 9,50. fließen so v. a. Saft —, Milch, Flüssigkeit entlassen, — ausströ-
 men: Baum Khānd. Up. 6,11,1. धारिभिः मेघाः Mānu. 91,7. धेनुः R. 5.
 67,3. कुञ्जरः MBh. 6,4073. जघनानि — श्रापीनानीव धेनुनाम् Hariv. 8623.
 नेत्रम् thränen Mānk. P. 43,25. Verz. d. Oxf. H. 31,6,21. mit acc. der
 Flüssigkeit: वृता रुधिराणि Shadv. Br. 5,8. नखतुण्डतताश्चैव सुस्रुवुः शो-
 णितं बद्ध MBh. 1,1485. 13,2797. R. 6,20,24. Suçr. 2,332,12. Bhaṭṭ.
 15,56. 17,18. नद्यो मेरेयम् R. 2,91,15 (100,13 Gorr.). 5,54,18. प्रस्वे-
 दम् MBh. 7,8104 (सुस्रुवते). सर्वगात्रेभ्यः स्वेदम् R. Gorr. 2,92,27. गौः
 पयः MBh. 13,3132. कुञ्जरेण स्रवता मदम् पर्वतेन तोयं स्रवमाणेन 6,4264.
 Kathās. 14,11. नहि मलयचन्दनतरुः परशुप्रकृतः स्रवेत्पूयम् (Conj.) Spr.
 (II) 401. शक्नुमूत्रम् MBh. 3,11118. श्रुतम् Kām. Nit. 17,15. आशयः
 किञ्चित् Suçr. 2,18,5. रसान् Hariv. 7010. गन्धान् 7011. सर्वपुष्पमयं गन्धं
 वराङ्गनाः 8030. पारिवाताः सर्वरत्नानि 7192. (दशा) साम्राया स्रवतीवा-
 स्मिन्सुतस्त्रेहं महीपतौ Kathās. 23,71. Bhaṭṭ. 2,13. धाराः पयसः — त-
 स्यास्यै यौवनाश्रय पाणिनिस्तस्य चास्रवत् goss aus MBu. 7,2279. — 2)
 fließen so v. a. rinnen, lecken: चमसः RV. 10,101,8. AV. 12,3,22. किद्रम् Ait.
 Br. 3,11. किद्रेण Pañāv. Br. 8,6,18. कुम्भः Kāṭi. Çr. 15,10,18. उखा 25,9,14.
 Çāṅk. Gṛh. 5,8. तैलपात्रमधः Kathās. 61,190. — 3) zerrinnen, miss-
 rathen: ein Opfer TS. 5,4,20,8. Çat. Br. 9,5,2,57. Pañāv. Br. 8.
 6,13. vergehen, verschwinden, zu Nichts werden: स्रवति न निवर्तते
 स्रोतांसि सरितामिव । आपुराहाय मर्त्यानां राज्यकानि पुनः पुनः II Spr.
 (II) 7264. कथं न (so ist zu lesen) मिथ्येत न च स्रवते न च प्रसिध्यदपि

(श्रवः) MBh. 3,14767. (ब्रह्म) स्रवत्यनोक्तं पूर्वं परस्ताच्च विशीर्यते M.
 2,74. स्रवते ब्रह्म तस्यापि भिन्नभाण्डात्पयो यथा Buāg. P. 4,14,11. तत-
 स्ततः स्रवते बुद्धिरस्य किद्रादकुम्भादिव नित्यमम्भः Spr. (II) 2266. ततो
 जस्य स्रवति प्रज्ञा दत्तेः पादादिवोदकम् 3867. ततो विद्या तपो यशः Buāg. P.
 7,15,19. चित्रा वाचः 11,14,7. यैर्यं नस्तव केतोरमुस्रवत् Bhaṭṭ. 6,18. रक्ष-
 स्यम् so v. a. verrathen werden Daçak. 89,12. — 4) zur Unzeit abgehen
 (von der Leibesfrucht) TBr. 3,7,3,6. MBh. 2,932. Buāg. P. 5,24,15. — 5)
 fließen aus (abl.) so v. a. hervorgehen, seinen Ursprung nehmen: का-
 लात्स्रवति भूतानि कालादृदि प्रयान्ति च Maitrjup. 6,14. धनादि धर्मः
 स्रवति शैलाधि नदी यथा Spr. (II) 3373. शरीरात्स्रवते (Conj.) धर्मः पर्व-
 तात्सलिलं यथा 6424. — 6) eingehen (von Zinsen): प्रतिमासं स्रवत्ती (स्र-
 वति v. l.) या वृद्धिः सा कालिका मता Nārada in Mit. 63,14. fg. —
 — स्रवत्तम् Pañāv. I,346 und स्रवति V,90 fehlerhaft; vgl. Spr. (II) 5842.
 2022. — 7) partic. सुत a) fließend, strömend; geflossen AK. 3,2,42. II.
 1496. रुधिर, रक्त M. 4,422. MBh. 7,1926. Suçr. 1,47,17. Varāh. Brh.
 S. 79,25. जल Mānu. 26,2. तीर Kūmaras. 1,9. स्तन्य Kathās. 110,109.
 शाखारस Ragh. 8,69. रुद्धपुस्ततासृ Çr. 9,15. — b) ausgelassen, leer
 geworden: कुम्भ Varāh. Brh. S. 24,26. fg. — c) verronnen: दोष Suçr.
 2,71,12. गर्भ (der Wolke) Varāh. Brh. S. 21,32. — d) n. Fluth: सुता-
 द्यमत्रिदिवमुन्निनाय AV. 13,2,4. — Die Schreibart शु (nicht in den
 Bomb. Ausgg.) erkennen wir nur für die ältere Sprache an; vgl. 2. शु.
 इत्येवं तुमुला वाचः शुश्रुवुः (so beide Ausgg.) प्रेतकेरिताः MBu. 1,5359
 führen wir gegon WESTERGAARD auf 1. शु zurück, da सु nicht vom Fluss
 der Rede gebraucht wird.

— caus. स्रावयति P. 1,3,86. Vop. 22,2. in Fluss setzen, fließen ma-
 chen: स्यावर्तः Kāṭi. 29,3. die Nase Suçr. 1,155,5. न गात्रात्स्रावये-
 दसृक् er vergiesse kein Blut M. 4,169. स्नेहम् Suçr. 2,348,10. 352,14.
 525,9. durch Scarification 7,21. गोमूत्रेण स्रावितः तारः flüssig gemacht
 Varāh. Brh. S. 54,115.

— desid. सुस्रुपति P. 7,4,81. Schol.

— desid. vom caus. सुस्रावयति und सि P. 7,4,81. Vop. 19,15.

— यति, partic. सुत übergelaufen: Soma VS. 10,31; vgl. 19,3. —
 caus. partic. सुतवित zu sehr zum Fließen gebracht durch Scarification
 Suçr. 2,332,18.

— समति, partic. सुत (सुमति) gedr.; man könnte übrigens auch सु-
 परिमुत vermuthen) zerronnen, ganz flüssig geworden Suçr. 2,66,19.

— ग्रहि herablaufen: von den Fingern Çat. Br. 7,5,2,44.

— ग्रभि herströmen P. V. 10,9,4. — Vgl. ग्रभिस्त्रवत् in den Nachträgen.

— ग्रव herabfließen; partic. सुत ऋच. Gṛh. 4,8,28. Vgl. समवस्रव.

— caus. herabfließen lassen Kāṭi. Çr. 19,4,14.

— ग्रन्व caus. dass. TS. 6,2,20,5. TBr. 1,3,8,3. Çat. Br. 12,8,2,17.

— व्यव caus. zerrinnen lassen: आयुः Kāṭi. 28,1.

— ग्रा 1) fließen Çat. Br. 14,6,22,4. ग्रन्व नेत्रयोः Buāg. P. 1,11,33.

ग्रन्वन्मद 10,59,15. यतः सरयुरास्रवत् entspringen 79,9. — 2) hinzu-
 fließen: योगप्रणाटिकाया कर्मास्रवति स योग आस्रवः SARVADARÇANAS. 36.

18. fg. HEM. JOGAC. 4,73. — 3) leck —, schadhaft —, unbrauchbar wer-
 den: तद्दि राष्ट्रमा स्रवति AV. 5,19,8. मा तं ग्रा सुस्रोत् 2,29,7. — Vgl.

आस्रव, आस्राव. — caus. 1) schröpfen Spr. (II) 1072. — 2) hinleiten,